राष्ट्रीय हिन्दी/साप्ताहिक

हिन्दुस्तान एकता

वर्ष: 07 | अंक: 10 | पृष्ठ: 04 | मूल्य: ₹1.00

info@hindustanekta.com

कैथल, सोमवार 11 मई, 2026

RNI-HRHIN/26/A1127

सूर्यास्त 07:06 | सूर्योदय 05:36

तापमान

अधिकतम 42° | न्यूनतम 29°

आपकी आवाज हमारी ताकत

आप कोई सामाजिक, धार्मिक आयोजन, प्रेस कॉन्फ्रेंस या किसी संस्था से जुड़ी कोई खबर, खुला नाला है, पानी से भरा गड्ढा है, रोड टूटी या गड्ढे हैं, हादसे का खतरा है इत्यादि खबरें हमारे साथ साझा करना चाहते हैं तो अब दूर नहीं। आपको केवल खबर और खबर से जुड़े चुनिंदा दो फोटो कैप्शन के साथ भेजना होगा। आपकी खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।

ऐसे भेजे

वॉट्सएप्प कर सकते हैं

9499422208

हमें QR स्कैन कर वेबसाइट पर भी भेज सकते हैं

कानून और मीडिया लोकतंत्र के सशक्त स्तंभ : प्रो. आशुतोष मिश्रा

» डॉ. बी.आर. अम्बेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय में "कानून, मीडिया व उनके मध्य का संवाद" विषय पर विशेष सत्र आयोजित

हिन्दुस्तान एकता » सोनीपत

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, सोनीपत में शुक्रवार को "कानून, मीडिया और उनके मध्य का संवाद" विषय पर विशेष संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को विधि और मीडिया के बदलते संबंधों, लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया की भूमिका तथा विधिक पत्रकारिता के उभरते आयामों के प्रति जागरूक करना रहा।

कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित पत्रकारों, विधिक संपादकों और मीडिया विशेषज्ञों ने भाग लेकर अपने अनुभव साझा किए तथा विद्यार्थियों को विधिक पत्रकारिता के व्यावहारिक पहलुओं से अवगत कराया। कार्यक्रम का शुभारंभ पारंपरिक दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। आयोजन माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) देविंदर सिंह के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ, जबकि कुलसचिव प्रो. (डॉ.) आशुतोष मिश्रा की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष महत्व प्रदान किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार एवं विधिक विशेषज्ञ संदीप फुकन, पवन शर्मा, सत्य प्रकाश, जतिन गांधी, सत सिंह, नीरज मोहन और मुकेश टंडन ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए।

स्वतंत्र मीडिया लोकतंत्र का प्रहरी : सत्य प्रकाश

वरिष्ठ विधिक संपादक सत्य प्रकाश ने कहा कि न्यायपालिका सत्य की खोज करती है, जबकि मीडिया लोकतंत्र का प्रहरी बनकर समाज और राज्य के बीच सेतु का कार्य करता है। उन्होंने न्यायिक जवाबदेही और निष्पक्ष रिपोर्टिंग की आवश्यकता पर बल दिया।

- **पत्रकारिता में नैतिकता जरूरी : जतिन गांधी**
जतिन गांधी ने कहा कि विज्ञापन आधारित मीडिया व्यवस्था समाचारों की प्राथमिकताओं को प्रभावित कर रही है। उन्होंने पत्रकारिता में नैतिकता, तथ्य-जांच और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के महत्व को रेखांकित किया।
- **कानूनी भाषा सरल बनाना जरूरी : संदीप फुकन**
संदीप फुकन ने कहा कि कानूनों और अधिकारों की जानकारी आम नागरिकों तक सरल भाषा में पहुंचनी चाहिए, तभी वास्तविक लोकतांत्रिक जागरूकता विकसित होगी।
- **कानून और मीडिया पति-पत्नी की तरह : नीरज मोहन**
नीरज मोहन ने कहा कि मीडिया कानून और समाज के बीच की दूरी को कम करता है। उन्होंने कानून और मीडिया की तुलना "पति-पत्नी" से करते हुए सत्य को दोनों की साझा जिम्मेदारी बताया।
- **प्रश्नोत्तर सत्र बना आकर्षण का केंद्र**
कार्यक्रम का सबसे आकर्षक भाग प्रश्नोत्तर सत्र रहा, जिसमें विद्यार्थियों ने विधिक पत्रकारिता, इंटर्नशिप, मीडिया नैतिकता और डिजिटल मीडिया के भविष्य से जुड़े सवाल पूछे।अंत में सभी अतिथियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक साबित हुआ।

कार्यक्रम की खासियत

- कानून, मीडिया और उनके मध्य का संवाद" विषय पर विशेष सत्र
- वरिष्ठ पत्रकारों एवं विधिक विशेषज्ञों ने साझा किए अनुभव
- विधिक पत्रकारिता, मीडिया नैतिकता और डिजिटल मीडिया पर चर्चा।
- विद्यार्थियों ने प्रश्नोत्तर सत्र में पूछे सवाल।
- लोकतंत्र में मीडिया और न्यायपालिका की भूमिका पर जोर

विद्यार्थियों के समग्र विकास पर जोर...

कुलसचिव प्रो. (डॉ.) आशुतोष मिश्रा ने कहा कि विश्वविद्यालय केवल विधिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास और संवैधानिक मूल्यों की समझ विकसित करने के लिए निरंतर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करता है। उन्होंने कहा कि कानून और मीडिया के बीच बेहतर समझ विकसित करना वर्तमान समय की आवश्यकता है, क्योंकि दोनों ही लोकतंत्र के मजबूत स्तंभ हैं।

मुख्य विषय रहे...

- न्यायालय से समाचार स्तंभ तक
- विधिक लेखन
- मीडिया और कानून का संबंध
- मीडिया विधि लेखन
- पत्रकारिता में नैतिकता और तथ्य-जांच

शिक्षक होंगे सशक्त, तभी बनेगी मजबूत पीढ़ी : डॉ. आर.पी. राठी

» डीएवी स्कूल नारायणगढ़ में जीवन कौशल विषय पर हुई कार्यशाला

हिन्दुस्तान एकता » नारायणगढ़

डीएवी सी.से. पब्लिक स्कूल, नारायणगढ़ में सीबीएसई (इन-सर्विस) के निर्देशानुसार शिक्षकों के लिए जीवन कौशल विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला हुई। कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के साथ व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन में संतुलन स्थापित करने के लिए प्रेरित करना रहा। कार्यशाला का शुभारंभ विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं कुशल प्रशिक्षकों आरती वर्मा और पूनम कुमारी ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। प्रधानाचार्य डॉ. आरपी राठी तथा कोऑर्डिनेटर ने विशिष्ट अतिथियों का ओ*म् पटका और पौधा भेंट कर स्वागत किया। इसके बाद डीएवी गान के साथ कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत हुई।

कार्यशाला के प्रमुख विषय

- तनाव प्रबंधन
- प्रभावी संचार कौशल
- त्वरित एवं सही निर्णय क्षमता
- छात्रों की भावनाओं को समझने की कला
- सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंध निर्माण
- मानसिक दबाव कम करने के उपाय

रोल प्ले और गतिविधियों से मिला व्यावहारिक अनुभव

कार्यशाला के दौरान विभिन्न गतिविधियों और रोल प्ले के माध्यम से शिक्षकों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया गया। शिक्षा विशेषज्ञों ने बताया कि चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में शांत रहकर सही निर्णय लेना और विद्यार्थियों की भावनाओं को समझना एक सफल शिक्षक की पहचान है।

शिक्षक समाज के निर्माता हैं : प्रधानाचार्य

प्रधानाचार्य डॉ. आर.पी. राठी ने कहा कि शिक्षक समाज के निर्माता होते हैं। यदि शिक्षक स्वयं जीवन कौशल में निपुण होंगे, तभी वे मानसिक रूप से मजबूत और सशक्त पीढ़ी का निर्माण कर पाएंगे।शिक्षकों ने कार्यशाला को ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक बताते हुए कहा कि ऐसे सत्रों से उन्हें पेशेवर जीवन के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन में भी नई सीख प्राप्त होती है। कार्यशाला के अंत में प्रधानाचार्य ने मुख्य प्रशिक्षकों को स्मृति चिन्ह भेंट कर धन्यवाद किया। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ के साथ हुआ।

न्यूज ब्रीफ

सीएम एमीनेट पर्सन टीम ने शिकायतों का किया निवारण

कुरुक्षेत्र » थानेसर सीएम विंडो कमेटी के एमीनेट पर्सन पूर्व मंडल अध्यक्ष हरीश अरोड़ा, गगन कोहली व रजनीश खासपुर ने सीएम विंडो पर दी गई शिकायतों का निवारण करवाया गया। एमीनेट पर्सन हरीश अरोड़ा ने कहा कि सीएम विंडो पर दी शिकायतों का निवारण सप्ताह में दो दिन सर्किट हाउस में निष्पक्षता के साथ किया जाता है। अधिकारीगण सीएम विंडो की शिकायतों को गंभीरता से लें और समय पर सीएम विंडो पर आई शिकायतों का समाधान कराए, ताकि नागरिकों को अपनी शिकायतों का समाधान मिल सके।

महाराणा प्रताप जयंती का राज्य स्तरीय समारोह अब 17 मई को

शहजादपुर » वीरता और स्वाभिमान के प्रतीक महाराणा प्रताप जयंती पर 9 मई को अनाज मंडी शहजादपुर में प्रस्तावित राज्य स्तरीय समारोह अब 17 मई को आयोजित किया जाएगा। यह जानकारी हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण, पशुपालन एवं मत्स्य पालन मंत्री श्याम सिंह राणा ने गांव खुड्डा कलां और तंदवाल में ग्रामीणों को संबोधित करते हुए दी।

आईपीएल: धर्मशाला में आज होगा पंजाब और दिल्ली के बीच मुकाबला

धर्मशाला » आईपीएल मुकाबलों के रोमांच का रंग इस बार फीका पड़ सकता है। अब क्रिकेट प्रेमियों की नजरें सिर्फ खिलाड़ियों पर नहीं, बल्कि मौसम पर भी टिकी हैं। कांगड़ा जिले में लगातार बदल रहे मौसम को देखते हुए मौसम विज्ञान केंद्र शिमला ने बारिश को लेकर येलो अलर्ट जारी किया है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम में होने वाले मुकाबलों पर बारिश का खतरा मंडराने लगा है। दरअसल 11 मई को धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम में मेजबान पंजाब किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच आईपीएल का टी-20 मैच होना है।

कैथल में माइ भारत क्विज की प्रारंभिक परीक्षा संपन्न

हिन्दुस्तान एकता » कैथल

100 स्कूलों के करीब 3000 विद्यार्थियों ने लिया उत्साहपूर्वक भाग देशभक्ति की भावना को मजबूत करने और विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के उद्देश्य से फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित माइ भारत क्विज की प्रारंभिक परीक्षा कैथल जिले में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। सांसद एवं फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष नवीन जिन्दल के मार्गदर्शन तथा ऑपरेशन सिंदूर की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित इस क्विज ने विद्यार्थियों के बीच उत्साह और जागरूकता का नया वातावरण तैयार किया। फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया की इस पहल की सराहना करते हुए जिला शिक्षा अधिकारी सुभाष कुमार ने बताया कि सांसद नवीन जिन्दल की विशेष पहल के तहत कैथल जिले के 100 स्कूलों में एक साथ "माइ भारत क्विज" की प्रारंभिक परीक्षा आयोजित की गई। इसमें करीब 3000 विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

लोक कलाओं के संरक्षण के लिए संस्कृति मंत्रालय की पहल

गुरु शिष्य परंपरा योजना के तहत अनुशंसाएं आमंत्रित

हिन्दुस्तान एकता » कैथल

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एवं लुप्तप्राय लोक कलाओं के संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, प्रयागराज के माध्यम से संचालित "गुरु शिष्य परंपरा योजना" के अंतर्गत वर्ष 2026-27 हेतु विभिन्न लोक कला विधाओं में अनुशंसाएं आमंत्रित की गई हैं।

यह योजना दुर्लभ एवं विलुप्त होती पारंपरिक कलाओं को संरक्षित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। योजना के तहत लोक गायन, लोक कथा, लोक चित्रकला, दुर्लभ वाद्य यंत्र एवं लोक नृत्य जैसी विधाओं को शामिल किया गया है। इस योजना का उद्देश्य देश की पारंपरिक एवं विलुप्तप्राय लोक कलाओं को नई पीढ़ी तक पहुंचाना और अनुभवी कलाकारों के माध्यम से कला प्रशिक्षण को बढ़ावा देना है। इससे लोक संस्कृति को संरक्षित करने के साथ-साथ युवा पीढ़ी को भारतीय सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने में भी मदद मिलेगी।

इन विधाओं में मांगे गए आवेदन..

लोक गायन, लोक कथा, लोक चित्रकला, दुर्लभ वाद्य यंत्र और लोक नृत्य।

योजना में गुरु और शिष्यों की व्यवस्था

विधा	संख्या
गुरु	01
शिष्य	04
लोक नृत्य में अधिकतम	8 शिष्य

संगतकारों की आवश्यकता वाली विधाएं 1 या 2 संगीतकार

सरकार द्वारा निर्धारित पात्रता शर्तें...

योजना के लिए आवेदन करने वाले कलाकारों हेतु सरकार ने कुछ मापदंड तय किए हैं

- आवेदक की आयु 50 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए।
- संबंधित कला क्षेत्र में कम से कम 20 वर्ष का अनुभव आवश्यक है।
- आवेदनकर्ता को अपना बायोडाटा एवं नवीनतम छायाचित्र संलग्न करना होगा।
- कला क्षेत्र में प्राप्त प्रमाण पत्रों की स्वयं प्रमाणित प्रतियां देना अनिवार्य होगा।
- सरकार अथवा प्रतिष्ठित कला एवं संस्कृति संस्थानों से प्राप्त पुरस्कार/मान्यता प्रमाण पत्रों की प्रतियां भी आवेदन के साथ लगानी होंगी।

पीएम मोदी ने बेंगलुरु में कहा- कांग्रेस कभी सत्ता में नहीं लौटेगी

» **नई दिल्ली.** प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि मुझे कर्नाटक में भगवा लहर दिखाई दे रही है। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव जीत आपकी जीत है। पश्चिम बंगाल में हमारे बस तीन विधायक थे, लेकिन अब हमारे 200 से अधिक विधायक हैं। उन्होंने कहा कि कर्नाटक बीजेपी के लिए हमेशा ऊर्जा का बड़ा स्रोत रहा है।

प्रधानमंत्री ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि वह कर्नाटक कई बार आ चुके हैं, लेकिन समय की कमी के कारण पहले सिर्फ छोटे कार्यक्रम ही एयरपोर्ट पर हो पाते थे। उन्होंने कहा कि यह पहली बार है जब एयरपोर्ट पर इतना बड़ा

कार्यक्रम आयोजित हुआ है। मोदी ने कहा कि आज बेंगलुरु की धरती से 'भगवा सूरज' उगता दिख रहा है। उन्होंने बीजेपी कार्यकर्ताओं की तारीफ करते हुए कहा कि इतनी बड़ी और अनुशासित भीड़ सिर्फ बीजेपी ही जुटा सकती है।

पुडुचेरी में लगातार दूसरी बार सत्ता में वापसी, असम में फिर से सरकार बनाने, पश्चिम बंगाल में बीजेपी की चुनावी जीत और गुजरात के स्थानीय निकाय चुनाव में पार्टी की व्यापक जीत का जिक्र करते हुए मोदी ने कहा कि ये परिणाम एक निर्णायक राजनीतिक बदलाव का संकेत देते हैं। उन्होंने कहा, "ये चुनाव परिणाम भारतीय राजनीति की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण हैं। ये भारत के युवाओं, महिलाओं, किसानों, गरीबों और मध्यम वर्ग के मिजाज को दर्शाते हैं।

यूपी सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार पर अखिलेश का तंज

» **नई दिल्ली.** मंत्रिमंडल विस्तार से पहले सपा प्रमुख ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट कर सवाल किया कि मंत्रिमंडल में केवल छह रिक्तियां हैं, इससे ज्यादा तो दूसरे दल से पाला बदल कर आए लोग हैं, क्या उन सभी को मंत्री पद से नवाजा जाएगा? यादव ने कहा कि एक समाज के कई विधायकों में से किसी एक को चुना जाएगा तो चुनने का आधार क्या होगा?, अगर ऐसा हुआ तो बाकी दल-बदलुओं का क्या होगा?

दिल्ली-एनसीआर में सोमवार और मंगलवार को बारिश की संभावना

» **नई दिल्ली.** आईएमडी के एक अधिकारी ने कहा, रविवार से पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में एक नए पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने की संभावना है। दिल्ली में सोमवार और मंगलवार को गरज-चमक के साथ बहुत हल्की बारिश हो सकती है। साथ ही 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं भी चलने की संभावना है। हवा की गति 50 किमी प्रति घंटे तक भी पहुंच सकती है। दिल्ली के सफदरजंग मौसम केंद्र में अधिकतम तापमान 36.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो एक दिन पहले के तापमान से 0.5 डिग्री सेल्सियस अधिक और सामान्य से 2.4 डिग्री सेल्सियस कम है। न्यूनतम तापमान 23.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो शुक्रवार की तुलना में 1.2 डिग्री अधिक है लेकिन सामान्य से 1.3 डिग्री कम भी है।

सख्ती » पीड़ित महिलाओं को तुरंत सहायता देने के लिए प्रशासन की पहल, डीसी ने जारी किए संपर्क नंबर

तीन उपमंडलों में दहेज निषेध अधिकारी नियुक्त

कलासो देवी » कैथल

जिले में दहेज उत्पीड़न के मामलों पर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन ने बड़ा कदम उठाया है। डीसी अपराजिता ने तीनों उपमंडलों (कैथल, कलायत और गुहला) में दहेज निषेध अधिकारियों की नियुक्ति करते हुए उनके मोबाइल नंबर और ई-मेल सार्वजनिक किए हैं, ताकि पीड़ित महिलाएं या आमजन सीधे शिकायत दर्ज कर सकें।

डीसी ने कहा कि दहेज प्रथा समाज के लिए गंभीर सामाजिक अभिशाप है और इसे समाप्त करने के लिए प्रशासन पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि दहेज उत्पीड़न की शिकायत मिलने पर संबंधित अधिकारी द्वारा तुरंत कार्रवाई की जाएगी तथा पीड़ित महिलाओं को समयबद्ध सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी।

उन्होंने आमजन से अपील करते हुए कहा कि यदि कहीं भी दहेज मांगने, प्रताड़ना या उत्पीड़न का मामला सामने आता है तो बिना डर संबंधित अधिकारी से संपर्क करें। डीसी अपराजिता के अनुसार कैथल उपमंडल में एसडीएम संजय कुमार को दहेज निषेध अधिकारी नियुक्त किया गया है। कलायत में एसडीएम अजय हुड्डा तथा गुहला में एसडीएम कैप्टन परमेश कुमार को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। प्रशासन का उद्देश्य जिले को दहेज मुक्त बनाना और महिलाओं को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध करवाना है।

संपर्क विवरण...

उपमंडल	अधिकारी	मोबाइल नंबर	ई-मेल
कैथल	एसडीएम संजय कुमार	85698-50989	sdm.kaithal@hry.nic.in
कलायत	एसडीएम अजय हुड्डा	81680-83673	sdm-kalayat.ktl@hry.gov.in
गुहला	एसडीएम कैप्टन परमेश कुमार	84480-30573	sdm.guhla@hry.nic.in

दहेज प्रथा समाज के लिए अभिशाप... डीसी अपराजिता ने कहा कि दहेज जैसी कुरीतियों के खिलाफ सामाजिक जागरूकता बेहद जरूरी है। प्रशासन का प्रयास है कि जिले में दहेज उत्पीड़न के मामलों पर त्वरित कार्रवाई हो और पीड़ितों को न्याय दिलाया जा सके।

मुख्यमंत्री बनने के बाद बोले विजय- झूठे वायदे कर लोगों को धोखा नहीं दूंगा

» **नई दिल्ली.** राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने जवाहरलाल नेहरू इनडोर स्टेडियम में आयोजित भव्य समारोह में टीवीके प्रमुख विजय को पद की शपथ दिलाई। इसके साथ ही राज्य में पहली बार किसी गैर-द्रविड़ दल की सरकार बन गई। टीवीके की सरकार बनते ही ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम और द्रविड़ मुनेत्र कषगम के परंपरागत वर्चस्व का अंत हो गया। राज्यपाल आर्लेकर ने विजय को 13 मई या उससे पहले तक विश्वास मत हासिल करने का समय दिया।

मुख्यमंत्री जोसेफ विजय ने घरेलू उपभोक्ताओं के लिए 200 यूनिट मुफ्त बिजली देने संबंधी पहली फाइल पर हस्ताक्षर किए।

साथ ही उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा के लिए विशेष बल के गठन संबंधी फाइल पर भी हस्ताक्षर किए। मुख्यमंत्री जोसेफ विजय ने अपने पहले संबोधन में कहा कि वह किसी शाही वंश से नहीं हैं, लेकिन लोगों ने उनका स्वागत किया और उन्हें स्वीकार किया। विजय ने कहा कि वह झूठे वादे कर लोगों को धोखा नहीं देंगे। टीवीके कार्यकर्ताओं की सीटियों की लगातार गूंजती आवाजों और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी की मौजूदगी के बीच विजय ने ईश्वर के नाम पर मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। मंत्रियों ने भी ईश्वर के नाम पर शपथ ली, जबकि पूर्ववर्ती द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) सरकार में अधिकतर मंत्रियों ने ऐसा नहीं किया था। विजय के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल में टीवीके नेता आधव अर्जुन, एन आनंद और के ए सेंगोट्टैयन सहित अन्य नेताओं ने मंत्री पद की शपथ ली।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जोसेफ विजय को तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने पर बधाई दी और कहा कि केंद्र सरकार लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए राज्य सरकार के साथ मिलकर काम करती रहेगी।

सुविचार

"जिंदगी वही बदलते हैं, जिनमें सीखने का जुनून होता है"

संपादकीय

महिलाओं की सुरक्षा कानून से आगे समाज की जिम्मेदारी...

आ देश में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर बहस हर उस घटना के बाद तेज हो जाती है, जो समाज को झकझोर देती है। कड़े कानून बनाने की मांग उठती है, सख्त सज़ाओं की बात होती है और सरकारें नए आश्वासन देती हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल कानून बना देने से महिलाओं को वास्तव में सुरक्षित महसूस कराया जा सकता है? सच यह है कि महिलाओं की सुरक्षा सिर्फ पुलिस, अदालत या सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

आज भी देश की लाखों महिलाएं घर से बाहर निकलते समय असुरक्षा का डर अपने साथ लेकर चलती हैं। सड़क, सार्वजनिक परिवहन, कार्यस्थल और यहां तक कि घर के भीतर भी कई महिलाएं हिंसा, उत्पीड़न और भेदभाव का सामना करती हैं। यह स्थिति तब है जब महिलाओं की सुरक्षा के लिए अनेक कानून पहले से मौजूद हैं। इसका अर्थ साफ है कि समस्या केवल कानून की कमी नहीं, बल्कि सोच और सामाजिक व्यवहार की भी है।

हमारे समाज में लंबे समय से महिलाओं को लेकर दोहरे मापदंड अपनाए जाते रहे हैं। लड़कियों के कपड़े, उनकी आवाजाही, उनके व्यवहार और जीवनशैली पर सवाल उठाए जाते हैं, लेकिन पुरुषों की मानसिकता पर उतनी गंभीर चर्चा नहीं होती। कई बार अपराधी से ज्यादा सवाल पीड़िता से पूछे जाते हैं। यही सोच महिलाओं के खिलाफ अपराधों को कहीं न कहीं सामाजिक मौन समर्थन देती है।

महिलाओं की सुरक्षा की शुरुआत परिवार से होती है। बच्चों को बचपन से ही महिलाओं के सम्मान, समानता और संवेदनशीलता की शिक्षा देना आवश्यक है। केवल बेटियों को सावधान रहने की सीख देना पर्याप्त नहीं, बेटों को जिम्मेदार और सम्मानजनक व्यवहार सिखाना भी उतना ही जरूरी है। जब तक समाज की मानसिकता नहीं बदलेगी, तब तक कानूनों का प्रभाव सीमित ही रहेगा।

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने भी महिलाओं के सामने नई चुनौतियां खड़ी की हैं। ऑनलाइन ट्रोलिंग, साइबर बुलिंग और निजी तस्वीरों के दुरुपयोग जैसी घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। डिजिटल सुरक्षा को भी अब महिलाओं की सुरक्षा के व्यापक दायरे में शामिल करना होगा।

सरकार और प्रशासन की जिम्मेदारी भी कम नहीं है। तेज न्याय प्रक्रिया, संवेदनशील पुलिस व्यवस्था, सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन, बेहतर स्ट्रीट लाइट और शिकायतों पर तुरंत कार्रवाई जैसे कदम महिलाओं के विश्वास को मजबूत कर सकते हैं। लेकिन इन प्रयासों को सफल बनाने के लिए समाज का सहयोग अनिवार्य है। किसी भी सभ्य समाज की पहचान इस बात से होती है कि वहां महिलाएं कितनी सुरक्षित और सम्मानित हैं। महिलाओं की सुरक्षा केवल महिला मुद्दा नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और मानवता का प्रश्न है। अब समय आ गया है कि हम केवल घटनाओं पर आक्रोश व्यक्त करने के बजाय अपनी सोच और व्यवहार में बदलाव लाएं। क्योंकि जब समाज अपनी जिम्मेदारी समझेगा, तभी कानून वास्तव में प्रभावी साबित होंगे। इसके साथ ही कार्यस्थलों पर महिलाओं के प्रति सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण तैयार करना भी समय की बड़ी आवश्यकता बन चुका है। आज महिलाएं शिक्षा, प्रशासन, विज्ञान, सेना, राजनीति और व्यापार सहित हर क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, लेकिन इसके बावजूद उन्हें कई बार भेदभाव, असुरक्षा और मानसिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। कई महिलाएं शिकायत दर्ज कराने से इसलिए डरती हैं क्योंकि उन्हें सामाजिक बदनामी, नौकरी खोने या परिवार के दबाव का भय रहता है। यह स्थिति दर्शाती है कि केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं, बल्कि महिलाओं को न्याय पाने का भरोसा दिलाना भी जरूरी है।

मीडिया और फिल्म जगत की भूमिका भी इस विषय में महत्वपूर्ण है। महिलाओं को केवल मनोरंजन की वस्तु के रूप में प्रस्तुत करने वाली मानसिकता समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं की छवि को सम्मान, आत्मनिर्भरता और समान अधिकारों के साथ प्रस्तुत किया जाए। सकारात्मक संदेश देने वाला मीडिया सामाजिक बदलाव का मजबूत माध्यम बन सकता है।

पहाड़ों में एक साल

कुछ इस तरह रहा उत्तराखंड में मेरा एक साल

भूगोल की किताबों से निकलकर जैसे ज़िंदगी के
असली पन्नों पर आ गई थी मैं।
हरियाली, सीढ़ीनुमा खेती और उनके बीच मेरा
पहाड़ों का सफर

शुरुआत में पहाड़ बहुत मुश्किल लगते थे लेकिन
धीरे-धीरे अपने से लगने लगे और प्रेरणादायक भी।

सुबह की ठंडी हवा, दूर तक फैले पहाड़
और खेतों में काम करती महिलाएं—
धीरे-धीरे यह सब मेरी रोज़मर्रा की
ज़िंदगी का हिस्सा बन गया।

और फिर मिले यहाँ के पहाड़ी लोग—
सीधे और दिल के अमीर,
जो सादगी और सरलता को एक
अलग ही पहचान देते हैं।

शायद इस लिए पहाड़ इतने खूबसूरत हैं,
क्योंकि यहाँ के लोग उन्हें और भी
खूबसूरत बना देते हैं।

हर दिन एक कहानी था, हर पल एक याद—
जो न कभी पुरानी होगी, न कभी भुलाई जा सकेगी।

यहाँ की हवा में जो सुकून है
वह सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

पता ही नहीं चला कब उत्तराखंड में एक साल हो गया।

— अदिति कुमारी, झारखंड

पढ़ाई बढ़ी लेकिन स्किल क्यों नहीं बढ़ी?

डॉ. सत्यवान सौरभ
कवि, सामाजिक विचारक एवं स्तंभकार, आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट

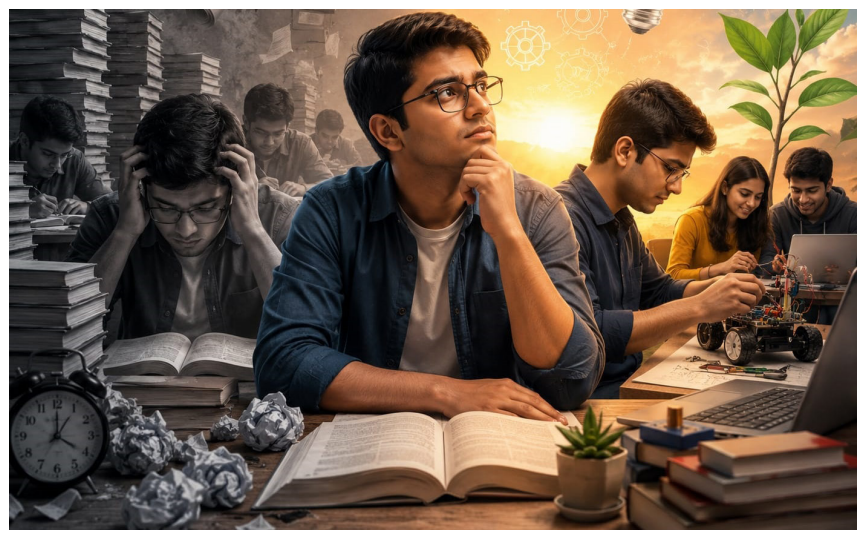

आज का समाज एक अजीब विरोधाभास के दौर से गुजर रहा है। एक तरफ शिक्षा का स्तर पहले से कहीं अधिक ऊँचा दिखाई देता है—हर घर में बच्चे पढ़ रहे हैं, कोचिंग, ऑनलाइन क्लासेस और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में जुटे हैं, और परिणामस्वरूप अंक भी लगातार बेहतर हो रहे हैं। लेकिन दूसरी तरफ एक सवाल लगातार सिर उठाता है—क्या सच में हम सीख रहे हैं, या सिर्फ अंकों का संग्रह कर रहे हैं?

यह विडंबना केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे शिक्षा तंत्र की दिशा पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती है। स्कूल से लेकर कॉलेज तक बच्चों को एक ऐसी दौड़ में शामिल कर दिया गया है, जहाँ लक्ष्य केवल अच्छे अंक लाना, उच्च रैंक हासिल करना और अधिक से अधिक प्रमाणपत्र जुटाना रह गया है। इस पूरी प्रक्रिया में "सीखना" कहीं पीछे छूट गया है। बच्चे यह समझने लगते हैं कि सफलता का मतलब है परीक्षा में सही उत्तर लिख देना, न कि उस ज्ञान को जीवन में लागू कर पाना।

इसी कारण आज हम ऐसे युवाओं को देखते हैं जो कागज पर बेहद सफल हैं, लेकिन वास्तविक जीवन की चुनौतियों के सामने असहज हो जाते हैं। वे जटिल प्रश्न हल कर सकते हैं, लेकिन सरल समस्याओं के व्यावहारिक समाधान में अटक जाते हैं। आत्मविश्वास की कमी, निर्णय लेने में झिझक, और नई परिस्थितियों में खुद को ढालने की कमजोरी—ये सब उस शिक्षा का परिणाम हैं जो "याद करने" पर अधिक और "समझने" पर कम आधारित है।

हमारी शिक्षा प्रणाली लंबे समय से रटने की संस्कृति पर टिकी रही है। बच्चों को यह सिखाया जाता है कि कौन-सा प्रश्न कैसे आएगा और उसका उत्तर किस तरह लिखना है। इस प्रक्रिया में उनकी जिज्ञासा धीरे-धीरे खत्म हो जाती है। वे सवाल पूछने से कतराने लगते हैं, क्योंकि उन्हें डर होता है कि कहीं वे "गलत" न साबित हो जाएँ। रचनात्मकता और स्वतंत्र सोच, जो किसी भी समाज के विकास के लिए जरूरी होती है, इस दबाव में दब जाती है।

जब यही बच्चे उच्च शिक्षा पूरी कर नौकरी की दुनिया में प्रवेश करते हैं, तब वास्तविकता सामने आती है। कंपनियाँ केवल डिग्री नहीं, बल्कि कौशल चाहती हैं—समस्या को समझने की क्षमता, टीम के साथ काम करने का हुनर, संवाद कौशल, और परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालने की योग्यता। लेकिन शिक्षा व्यवस्था ने उन्हें इन सबके लिए तैयार ही नहीं किया होता। यही कारण है कि डिग्री बढ़ने के बावजूद रोजगार के अवसरों का लाभ उठाने में युवा पीछे रह जाते हैं। यह केवल बेरोजगारी का नहीं, बल्कि "स्किल गैप" का संकट है।

इस पूरी प्रक्रिया का एक और गंभीर पहलू है—मानसिक दबाव। आज के छात्र पर अपेक्षाओं का बोझ बहुत अधिक है। परिवार, समाज और प्रतिस्पर्धा—तीनों मिलकर उस पर निरंतर दबाव बनाते हैं कि वह हर हाल में अच्छा प्रदर्शन करे। लेकिन जब पढ़ाई का उद्देश्य स्पष्ट नहीं होता, तो यह दबाव धीरे-धीरे तनाव और भ्रम में बदल जाता है। बच्चे यह समझ ही नहीं पाते कि वे जो पढ़ रहे हैं, उसका उनके जीवन से क्या संबंध है।

असल में शिक्षा का उद्देश्य कभी केवल परीक्षा पास करना नहीं था। शिक्षा का अर्थ है व्यक्ति को जीवन के लिए तैयार करना—उसे सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता देना। यह उसे केवल जानकारी नहीं, बल्कि उस जानकारी का उपयोग करना सिखाती है। लेकिन जब शिक्षा केवल अंकों तक सीमित हो जाती है, तो वह अपने मूल उद्देश्य से भटक जाती है।

समस्या का समाधान भी इसी समझ में छिपा है। जब तक हम शिक्षा को केवल "परिणाम" के रूप में देखेंगे, तब तक यह समस्या बनी रहेगी। जरूरत है कि हम प्रक्रिया पर ध्यान दें—कैसे बच्चे सीख रहे हैं, क्या वे वास्तव में समझ रहे हैं, क्या वे अपने ज्ञान को लागू कर पा रहे हैं। पाठ्यक्रम को ऐसा बनाया जाना चाहिए जो बच्चों को सोचने और प्रयोग करने के लिए प्रेरित करे। परीक्षा प्रणाली को इस तरह बदला जाना चाहिए कि वह केवल याददाश्त नहीं, बल्कि समझ और अनुप्रयोग को परखे।

शिक्षकों की भूमिका भी इस बदलाव में बेहद महत्वपूर्ण है। उन्हें केवल पाठ पढ़ाने वाले नहीं, बल्कि मार्गदर्शक बनना होगा, जो बच्चों को सवाल पूछने, गलती करने और उससे सीखने के लिए प्रेरित करें। वहीं अभिभावकों को भी अपनी सोच बदलनी होगी। बच्चों की सफलता को केवल अंकों से नहीं, बल्कि उनके कौशल, आत्मविश्वास और समझ से आंकना होगा। डिजिटल युग ने सीखने के नए रास्ते खोले हैं, लेकिन इनका सही उपयोग तभी संभव है जब हमारे पास सीखने की सही दृष्टि हो। केवल जानकारी तक पहुँच होना पर्याप्त नहीं है, उसे समझना और उपयोग करना ही असली शिक्षा है। अंततः यही बात सबसे महत्वपूर्ण है कि नंबर यह बताते हैं कि आपने कितना याद किया, लेकिन ज्ञान और कौशल यह बताते हैं कि आप क्या कर सकते हैं। यदि हमारी शिक्षा प्रणाली इस अंतर को समझने में सफल हो जाती है, तो न केवल छात्रों का भविष्य बेहतर होगा, बल्कि समाज भी अधिक सक्षम और जागरूक बनेगा। आज जरूरत है इस सवाल को गंभीरता से पूछने की—क्या हम सच में शिक्षित हो रहे हैं, या सिर्फ शिक्षित दिखने की कोशिश कर रहे हैं? क्योंकि जब तक इस सवाल का ईमानदार जवाब नहीं मिलेगा, तब तक पढ़ाई बढ़ती रहेगी, लेकिन स्किल नहीं बढ़ेगी।

(यह लेखक के निजी विचार है)

विकास के साथ विरासत शिक्षा में संतुलन की मांग

गणेश गुप्ता
समाज सेवक

भारत के पाँच राज्यों-पश्चिम बंगाल, असम, पुडुचेरी, तमिलनाडु एवं केरल-में हुए हालिया विधानसभा चुनावों ने देश की राजनीति को एक नई दिशा और संकेत प्रदान किया है। इन चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने कई क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए अपनी राजनीतिक स्थिति को और मजबूत किया है। असम में पार्टी ने पुनः सत्ता प्राप्त कर यह सिद्ध किया कि जनता का विश्वास अभी भी उसके साथ बना हुआ है। पुडुचेरी में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की वापसी ने भी संगठन की मजबूती और समन्वय को दर्शाया है। वहीं तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में, जहाँ पारंपरिक रूप से भाजपा का प्रभाव सीमित रहा है, पार्टी ने अपने मत प्रतिशत में वृद्धि कर भविष्य की संभावनाओं के नए द्वार खोले हैं। पश्चिम बंगाल में भाजपा ने ऐतिहासिक जीत हासिल की है और देश की राजनीतिक में एक नया इतिहास रचा है, पहली बार भाजपा बिना किसी समर्थन के सरकार बनाने जा रही है। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने देशभर में अपने संगठनात्मक ढांचे को सुदृढ़ करते हुए जनता के बीच अपनी स्वीकार्यता को निरंतर बढ़ाया है। यह सफलता केवल चुनावी रणनीति का परिणाम नहीं है, बल्कि लंबे समय से किए जा रहे संगठनात्मक प्रयासों और जनसंपर्क का भी प्रतिफल है।

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए, तो श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा स्थापित भारतीय जनसंघ से लेकर आज की भाजपा तक की यात्रा राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक मूल्यों और समाज सेवा के सिद्धांतों पर आधारित रही है। पश्चिम बंगाल से संबंध रखने वाले मुखर्जी जी के विचारों और आदर्शों ने पार्टी को एक मजबूत वैचारिक आधार प्रदान किया है। ऐसे में यह अपेक्षा स्वाभाविक है कि राजनीतिक विस्तार के साथ-साथ सांस्कृतिक और शैक्षिक क्षेत्रों में भी समान रूप से ध्यान दिया जाए। वर्तमान समय में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि विभिन्न समुदाय अपने बच्चों को अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़े शिक्षण संस्थानों में भेजते हैं। मुस्लिम समाज में मदरसे, सिख समुदाय में गुरुद्वारा-आधारित विद्यालय और ईसाई समुदाय में मिशनरी स्कूल इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन संस्थानों के माध्यम से न केवल शिक्षा प्रदान की जाती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को उनकी परंपराओं और मूल्यों से भी जोड़ा जाता है। इसके विपरीत, सनातन परंपरा में गुरुकुल प्रणाली, जो प्राचीन समय में शिक्षा का प्रमुख केंद्र हुआ करती थी, आज सीमित होती जा रही है। गुरुकुलों में केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षा, अनुशासन, संस्कार और जीवन के मूल्यों का भी समावेश होता था। विद्यार्थी अपने गुरु के सान्निध्य में रहकर जीवन के हर पहलू को समझते थे, जिससे उनका सर्वांगीण विकास होता था।

आज के आधुनिक युग में शिक्षा का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में भेजना अधिक उचित समझते हैं, जिससे उन्हें बेहतर करियर और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने का अवसर मिल सके। यह दृष्टिकोण अपने आप में गलत नहीं है, क्योंकि आधुनिक शिक्षा समय की मांग है। परंतु इसके साथ-साथ यह भी एक सच्चाई है कि इस प्रक्रिया में हमारी नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों और परंपराओं से धीरे-धीरे दूर होती जा रही है।

बच्चों को अपने इतिहास, धर्म, संस्कृति और मूल्यों की पर्याप्त जानकारी नहीं मिल पाती, जिससे उनके भीतर अपनी पहचान को लेकर स्पष्टता का अभाव देखा जाता है। यह स्थिति दीर्घकाल में समाज के लिए चुनौतीपूर्ण साबित हो सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा को भी समान महत्व दिया जाए। देश में वर्तमान समय में गुरुकुलों की संख्या अत्यंत सीमित है और उनके प्रति जागरूकता भी कम है। यदि केंद्र और राज्य सरकारें इस दिशा में गंभीरता से विचार करें और प्रत्येक शहर तथा गाँव में गुरुकुलों की स्थापना को प्रोत्साहित करें, तो यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है। गुरुकुलों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ समन्वित कर एक ऐसा मॉडल तैयार किया जा सकता है, जिसमें विज्ञान और तकनीक के साथ-साथ संस्कृति और संस्कारों का भी समावेश हो।

डिजिटल युग में युवाओं की जीवनशैली में भी व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और डिजिटल मनोरंजन ने युवाओं के समय और ऊर्जा का एक बड़ा हिस्सा अपने कब्जे में ले लिया है। रील्स और त्वरित मनोरंजन की प्रवृत्ति के कारण युवाओं का ध्यान एकाग्रता, अध्ययन और रचनात्मक कार्यों से भटकता जा रहा है। यह एक गंभीर सामाजिक चुनौती है, जिस पर अभिभावकों, शिक्षकों और नीति-निर्माताओं को मिलकर विचार करना होगा। यदि समय रहते इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाली पीढ़ी केवल तकनीकी रूप से सक्षम तो होगी, लेकिन सांस्कृतिक और नैतिक रूप से कमजोर हो सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली में संतुलन स्थापित किया जाए, जिसमें आधुनिकता और परंपरा दोनों का समन्वय हो।

(यह लेखक के निजी विचार है)

बदलते भारत में लिव इन रिलेशनशिप

डॉ. प्रियंका सौरभ
पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक

भारतीय समाज परिवर्तन के ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहां परंपराएं और आधुनिकता आमने-सामने खड़ी दिखाई देती हैं। कभी जो बातें केवल महानगरों तक सीमित मानी जाती थीं, वे अब छोटे शहरों और कस्बों तक पहुँच चुकी हैं। "लिव-इन रिलेशनशिप" भी ऐसा ही एक सामाजिक परिवर्तन है, जिसे अब केवल दिल्ली, मुंबई या बेंगलुरु की जीवनशैली कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। आज छोटे शहरों में पढ़ाई या नौकरी के लिए घर से दूर रहने वाले युवाओं के बीच भी यह व्यवस्था सामान्य होती जा रही है।

समाज का एक बड़ा वर्ग इसे भारतीय संस्कृति पर हमला मानता है, जबकि दूसरा वर्ग इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और परिपक्व रिश्तों की निशानी कहता है। लेकिन इन दोनों ध्रुवों के बीच सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आखिर भारतीय समाज किस दिशा में बढ़ रहा है? विवाह, प्रेम और पारिवारिक संरचना की जो अवधारणाएँ सदियों से चली आ रही थीं, क्या वे अब बदल रही हैं? और यदि बदल रही हैं, तो उसके सामाजिक परिणाम क्या होंगे?

आज की पीढ़ी प्रेम को केवल सामाजिक स्वीकृति के दायरे में नहीं देखती। वह उसे व्यक्तिगत चुनाव और भावनात्मक अनुकूलता के रूप में समझती है। यही कारण है कि युवाओं के बीच यह सोच बढ़ी है कि विवाह से पहले साथ रहकर एक-दूसरे को समझ लेना अधिक व्यावहारिक है। वे मानते हैं कि शादी जीवनभर का निर्णय है, इसलिए पहले यह जान लेना जरूरी है कि दोनों साथ रह पाने योग्य हैं या नहीं। यह सोच पश्चिमी समाजों से प्रभावित अवश्य है, लेकिन केवल प्रभाव भर नहीं है; इसके पीछे भारतीय समाज की बदलती आर्थिक और सामाजिक संरचना भी है।

बड़े शहरों में नौकरी करने वाले युवाओं का जीवन अब संयुक्त परिवारों से दूर, अकेलेपन और प्रतिस्पर्धा के बीच गुजरता है। ऐसे में भावनात्मक सहारा, मानसिक निकटता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की चाह उन्हें लिव-इन जैसे विकल्पों की ओर ले जाती है। पहले प्रेम संबंध छुपाए जाते थे, आज कई परिवारों को अपने बच्चों के रिश्तों की जानकारी होती है। वे विरोध करने के बजाय मौन स्वीकृति देने लगे हैं। कई माता-पिता सोचते हैं कि समय के साथ बच्चे स्वयं समझदार हो जाएंगे या अंततः परिवार की पसंद से विवाह कर लेंगे।

यह स्थिति भारतीय परिवार व्यवस्था के भीतर एक नए प्रकार के समझौते को जन्म दे रही है। माता-पिता पूरी तरह आधुनिक नहीं हुए हैं, लेकिन पूरी तरह पारंपरिक भी नहीं रह गए। वे जानते हैं कि रोक-टोक अब पहले जैसी प्रभावी नहीं रही। इसलिए वे खुलकर विरोध करने के बजाय परिस्थितियों के साथ चलना बेहतर समझते हैं। इसी संदर्भ में जब कुछ प्रसिद्ध परिवार अपने बच्चों के लिव-इन संबंधों को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते हैं, तो वह समाज में एक प्रतीकात्मक संदेश बन जाता है। अभिनेत्री और टीवी व्यक्तित्व अर्चना पूरन सिंह द्वारा अपने बेटों की गर्लफ्रेंड्स को घर में साथ रहने की अनुमति देना केवल निजी निर्णय नहीं, बल्कि बदलती सामाजिक मानसिकता का संकेत भी है। इसे कुछ लोग अत्यधिक उदारता कहेंगे, कुछ परिपक्वता। लेकिन इसके पीछे एक व्यावहारिक सोच भी दिखाई देती है।

आज प्रेम संबंधों में अस्थिरता और हिंसा की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। समाचारों में आए दिन प्रेमी-प्रेमिका के बीच हत्या, आत्महत्या, ब्लैकमेल या मानसिक प्रताड़ना की घटनाएं दिखाई देती हैं। ऐसे समय में यदि परिवार अपने बच्चों के संबंधों से पूरी तरह अनजान बने रहने के बजाय उन्हें अपनी निगरानी और संरक्षण में स्वीकार करता है, तो संभव है कि कई दुखद स्थितियों से बचा जा सके। घर का वातावरण कम से कम संवाद और जिम्मेदारी का भाव बनाए रखता है। हालाँकि इस पूरी बहस में एक पक्ष अक्सर नजरअंदाज हो जाता है—लड़कियों के माता-पिता का पक्ष। भारतीय समाज अभी भी बेटी के संबंधों को लेकर अधिक संवेदनशील और नियंत्रक बना हुआ है। ऐसे में जब कोई लड़की खुले तौर पर अपने प्रेमी के साथ रहने का निर्णय लेती है, तो उसके परिवार पर सामाजिक दबाव कहीं अधिक पड़ता है। यही कारण है कि समाज में स्वीकृति का यह परिवर्तन अभी पूरी तरह समान नहीं है; लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग मानदंड अब भी मौजूद हैं। दरअसल, लिव-इन रिलेशनशिप पर बहस केवल नैतिकता की बहस नहीं है। यह विवाह संस्था के बदलते स्वरूप की भी बहस है। भारतीय समाज में विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं माना गया; वह परिवार, परंपरा, सामाजिक प्रतिष्ठा और वंश की निरंतरता से जुड़ा संस्थान रहा है। लेकिन नई पीढ़ी विवाह को साझेदारी और व्यक्तिगत संतोष के रूप में देखने लगी है।

(ये लेखिका के निजी विचार है)

बहुत कठिन है डगर पनघट की...

महेन्द्र तिवारी, भूतपूर्व वायुसैनिक, संप्रति राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में कार्यरत

तमिलनाडु की राजनीतिक में वर्ष 2026 के विधानसभा चुनावों ने एक ऐसी पटकथा लिख दी है जिसकी कल्पना पारंपरिक द्रविड़ राजनीति के दिग्गजों ने कदाचित ही की होगी। सिनेमा के पर्दे से निकलकर जननायक बनने की राह पर अग्रसर थलपति विजय और उनकी नवगठित राजनीतिक शक्ति तमिलगा वेत्री कड़गम ने राज्य के दशकों पुराने द्विध्रुवीय राजनीतिक ढांचे को झकझोर कर रख दिया है। यह चुनाव मात्र सत्ता के हस्तांतरण का माध्यम नहीं रहा बल्कि इसने तमिलनाडु के सामाजिक और राजनीतिक मानस में गहरे पैठ बना चुके द्रविड़ गौरव और परिवर्तन की आकांक्षा के बीच एक नए संघर्ष को जन्म दिया है। विजय की पार्टी ने अपनी पहली ही चुनावी परीक्षा में 108 सीटों पर विजय पताका फहराकर सबको विस्मित कर दिया किंतु लोकतंत्र के कठोर गणित ने उन्हें सत्ता की दहलीज पर लाकर एक अनिश्चितता के भंवर में खड़ा कर दिया है। 234 सदस्यों वाली तमिलनाडु विधानसभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त करने के लिए 118 का जादुई आंकड़ा अनिवार्य है और विजय की सेना इस लक्ष्य से मात्र 10 कदम दूर रह गई है। यह 10 सीटों की दूरी वर्तमान में तमिलनाडु की राजनीति का सबसे बड़ा और जटिल प्रश्न बन गई है जिसने राज्य के भविष्य को अनिश्चितता के बादलों से घेर लिया है।

विजय के समक्ष उत्पन्न हुई चुनौतियों का विश्लेषण करें तो सबसे पहली बाधा स्वयं उनकी जीत के तकनीकी स्वरूप से उपजी है। विजय ने अपनी लोकप्रियता को सिद्ध करने हेतु दो अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों से चुनाव लड़ा और दोनों ही स्थानों पर विजय प्राप्त की। यद्यपि यह उनके व्यक्तिगत प्रभाव का प्रमाण है परंतु संवैधानिक नियमों के अनुसार उन्हें एक सीट से त्यागपत्र देना होगा। इस प्रक्रिया के पश्चात उनकी पार्टी की प्रभावी सदस्य संख्या 107 रह जाएगी जिसका सीधा अर्थ यह है कि अब उन्हें बहुमत सिद्ध करने के लिए 11 और सदस्यों के समर्थन की आवश्यकता होगी। संख्याबल का यह सूक्ष्म अंतर किसी भी राजनीतिक दल के लिए सामान्य परिस्थितियों में सरल हो सकता था परंतु तमिलनाडु की वर्तमान घेराबंदी ने इसे अत्यंत दुष्कर बना दिया है। विजय के समर्थन में कांग्रेस के 8 विधायक और वामपंथी दलों के 2 विधायक खड़े दिखाई दे रहे हैं जिससे यह कुल आंकड़ा 117 तक पहुंचता हुआ प्रतीत होता है। फिर भी बहुमत के लिए आवश्यक 118 के आंकड़े तक पहुंचने के लिए अंतिम एक सदस्य का समर्थन जुटाना उनके लिए हिमालय लांघने जैसी चुनौती बन गया है।

राजनीति में शत्रु का शत्रु मित्र होता है और यह उक्ति इस समय तमिलनाडु में चरितार्थ होती दिख रही है। दशकों तक एक-दूसरे के धुर विरोधी रहे द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम एक नए और प्रभावशाली विकल्प के उदय से सशंकित हैं। सत्ता के गलियारों में यह सुगबुगाहट तीव्र है कि ये दोनों ही स्थापित शक्तियां एक नवागंतुक को मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुंचने से रोकने के लिए गुप्त रणनीतियों पर कार्य कर रही हैं। वे जानते हैं कि यदि विजय एक बार सत्तासीन हो गए तो राज्य में उनके वर्चस्व का सूर्य सदा के लिए अस्त हो सकता है। यही कारण है कि छोटे दलों और निर्दलीय विधायकों को अपने पाले में बनाए रखने के लिए विपक्षी खेमों द्वारा साम, दाम, दंड और भेद का खुला प्रयोग किया जा रहा है। अम्मा मक्कल मुनेत्र कड़गम जैसे छोटे राजनीतिक समूहों ने विजय की पार्टी पर फर्जी दस्तावेजों और अनैतिक दबाव के आरोप लगाकर इस राजनीतिक युद्ध को कानूनी गलियारों तक खींच लिया है। इन आरोपों ने न केवल विजय की छवि को प्रभावित करने का प्रयास किया है बल्कि गठबंधन की प्रक्रिया में भी अवरोध उत्पन्न कर दिए हैं।

इस पूरे घटनाक्रम में राजभवन की भूमिका अत्यंत निर्णायक और संवैधानिक मर्यादाओं से बंधी हुई है। राज्यपाल राजेंद्र अर्लेकर ने सरकार गठन की प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की शिथिलता बरतने से इनकार कर दिया है। राजभवन का स्पष्ट मत है कि केवल मौखिक दावों या संख्या बल के प्रदर्शन मात्र से सरकार गठन का निमंत्रण नहीं दिया जा सकता। राज्यपाल महोदय ने विजय के समक्ष यह शर्त रख दी है कि उन्हें समर्थन देने वाले प्रत्येक विधायक का व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होना और उनके हस्ताक्षरित समर्थन पत्रों का भौतिक सत्यापन अनिवार्य होगा। संवैधानिक प्रावधानों की यह कठोरता विजय के लिए एक बड़ी बाधा सिद्ध हो रही है क्योंकि गठबंधन के घटक दलों के भीतर भी असंतोष के स्वर उभरने की आशंका बनी रहती है। विधायकों की बाड़ेबंदी और उन्हें विपक्षी प्रलोभनों से बचाकर रखना विजय के नेतृत्व की सबसे बड़ी परीक्षा है। यदि वे अपने कुनबे को सुरक्षित रखते हुए राज्यपाल को संतुष्ट करने में विफल रहते हैं तो राज्य में एक गहरा संवैधानिक संकट उत्पन्न हो सकता है।

(यह लेखक के निजी विचार है)

न्यूज ब्रीफ

लिपुलेख पर घिरे बालेन शाह, अब नेपाली सांसदों ने काटा बवाल!

नई दिल्ली » भारत और नेपाल के बीच का विवाद अभी थमता हुआ नहीं दिख रहा है। जहां पहले नेपाल की बालेन सरकार ने मानसरोवर यात्रा के लिए लिपुलेख दर्रे के इस्तेमाल पर प्रोटेस्ट नोट जारी किया था। इन सबके बीच एक बार फिर नेपाल के भीतर से लिपुलेख को लेकर मांग उठने लगी है। दरअसल नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व वाली विपक्ष ने प्रधानमंत्री बालेन शाह की सरकार पर सीधा दबाव बनाया है कि वह भारत और चीन के साथ सिर्फ डिप्लोमेटिक नोट्स यानी कि प्रोटेस्ट नोट जैसी कूटनीतिक चिट्ठियों का आदानप्रदान बंद करें और सीधे टेबल टॉक यानी उच्च स्तरीय बातचीत करें लिपुलेख के मुद्दे पर।

चीन के 2 पूर्व रक्षा मंत्री को राष्ट्रपति जिनपिंग ने सुनाई मौत की सजा

नई दिल्ली » चीन में भ्रष्टाचार के खिलाफ राष्ट्रपति जिनपिंग का सबसे बड़ा और सबसे सख्त एक्शन सामने आया है। चीन ने अपने दो पूर्व रक्षा मंत्री वे फेंग और ली शंगफो को मौत की सजा सुनाकर पूरी दुनिया को चौंका दिया है। बड़ी बात यह है कि दोनों नेता कभी राष्ट्रपति जिनपिंग के बेहद करीबी माने जाते थे और चीन की सबसे ताकतवर सैन्य संस्था सेंट्रल मिलिट्री कमीशन का हिस्सा भी रह चुके थे। अब भ्रष्टाचार के साथ-साथ उन पर बेवफाई जैसे गंभीर आरोपों का भी खुलासा हुआ है। चीनी सरकारी मीडिया सिंह के मुताबिक पूर्व रक्षा मंत्री भी फेंग और ली शंगू को भ्रष्टाचार के मामलों में दोषी पाए जाने के बाद मौत की सजा सुनाई गई।

होर्मुज स्ट्रेट के पास नौका में लगी आग, एक भारतीय नाविक की मौत, 17 बचाए गए

नई दिल्ली » सामान लेकर जा रही नौका आग लगने के बाद होर्मुज जलडमरूमध्य के पास पलट गई। इस पर भारतीय चालक दल के 18 सदस्य सवार थे। इस घटना में नौका पर सवार एक भारतीय की मौत हो गई, जबकि चार लोग झुलस गए। घायलों का दुबई में उपचार किया जा रहा है और उनकी हालत स्थिर है। चालक दल के सदस्यों को उस क्षेत्र से गुजर रहे एक जहाज ने बचाया। आग लगने के सही कारण का अभी पता लगाया जा रहा है।

होर्मुज में तनाव जारी

आग लगने की घटना ऐसे समय हुई है जब होर्मुज स्ट्रेट में तनाव जारी है। ईरान और अमेरिका के बीच स्थिति और बिगड़ी नजर आ रही है। फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी के बीच स्थित होर्मुज स्ट्रेट एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है, जिससे दुनिया की तेल आपूर्ति का बड़ा हिस्सा गुजरता है।

भारतीय नागरिकों के संपर्क में भारत...

भारतीय महावाणिज्यदूतावास के अधिकारियों ने शुक्रवार रात बचाए गए भारतीय नागरिकों से मुलाकात की। पीटीआई की खबर के अनुसार भारतीय वाणिज्य दूतावास नौका के मालिक के संपर्क में है और हरसंभव सहायता प्रदान कर रहा है।

कोरोना के बाद हंटा वायरस का कहर!

3 मौतों ने बढ़ाई चिंता, चूहों से फैलता है इंफेक्शन

एजेंसी » नई दिल्ली

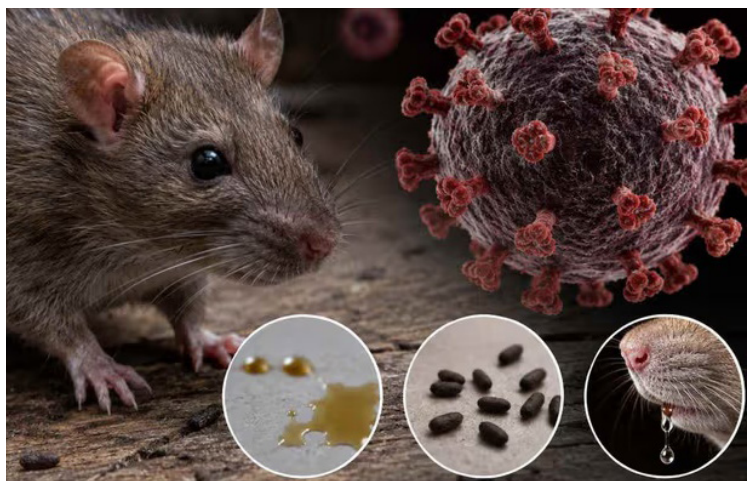

नीदरलैंड के झंडे वाले एमवी हॉनडियस क्रूज जहाज में हंटावायरस के प्रकोप ने हड़कंप मचा दिया है। इस संक्रमण के चलते अब तक तीन यात्रियों की मौत हो चुकी है, जबकि कई अन्य बीमार बताए जा रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, 24 अप्रैल को दर्जनों यात्री बिना संपर्क ट्रेसिंग पूरी हुए जहाज से उतरकर चले गए। इससे लगभग दो सप्ताह पहले ही जहाज पर संक्रमण से पहली मौत दर्ज की गई थी। जहाज संचालक कंपनी और नीदरलैंड के अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की है। पहला मामला 11 अप्रैल को सामने आया था, जब एक डच नागरिक की मौत के बाद उसका शव सेंट हेलेना के एक द्वीप पर उतारा गया। बाद में उसकी पत्नी भी जहाज से उतर गई और दक्षिण अफ्रीका चली गई, जहां उसकी भी मौत हो गई। इस घटना ने पूरे मामले को और गंभीर बना दिया।

» **29 यात्रियों की तलाश जारी...** जहाज संचालक कंपनी ने बताया कि करीब 29 यात्री जहाज छोड़कर चले गए, जबकि नीदरलैंड के विदेश मंत्रालय के अनुसार यह संख्या करीब 40 तक हो सकती है। कंपनी ने पहले इस बात से इनकार किया था कि इतनी बड़ी संख्या में लोग जहाज छोड़ चुके हैं। नीदरलैंड स्थित कंपनी महासागरव्यापी अभियान ने यह भी बताया कि जहाज से उतरे यात्रियों में कम से कम 12 विभिन्न देशों के नागरिक शामिल थे। अब दक्षिण अफ्रीका और यूरोप के कई देश इन यात्रियों की ट्रेसिंग में जुटे हुए हैं।

» **तीन लोगों को इलाज के लिए भेजा गया यूरोप...** स्वास्थ्य एजेंसियों के अनुसार, जहाज पर सवार कई लोगों में हंटावायरस की पुष्टि हुई है। बुधवार (6 मई) को यह भी सामने आया कि सेंट हेलेना द्वीप पर जहाज से उतरा एक यात्री स्विट्जरलैंड में संक्रमित पाया गया, जिसके बाद वह अपने घर लौट गया। इसके अलावा, जहाज पर सवार एक ब्रिटिश व्यक्ति को असेंशन द्वीप से निकालकर दक्षिण अफ्रीका ले जाया गया, जबकि केप वर्डे के पास जहाज से एक ब्रिटिश डॉक्टर सहित तीन लोगों को इलाज के लिए यूरोप भेजा गया।

» **डब्ल्यूएचओ ने की पांच मामलों की पुष्टि...** विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, अब तक पांच मामलों में हंटावायरस संक्रमण की पुष्टि हो चुकी है, जबकि आठ संदिग्ध मामलों पर जांच जारी है। संगठन ने बताया कि तीन लोगों की मौत हो चुकी है और जहाज पर अभी भी कई लोग निगरानी में हैं।

कैसे फैलता है हंटा वायरस?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने बताया है कि हंटावायरस आमतौर पर चूहों के मल, मूत्र या लार से फैलता है और संक्रमित कण सांस के जरिए शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। हालांकि, व्यक्ति से व्यक्ति में इसका फैलाव बहुत दुर्लभ माना जाता है। बता दें, इसके पहले साल 2019 में दुनिया में कोरोना का कहर फैला था। दुनिया के सभी देश इससे प्रभावित हुए थे। लाखों की संख्या में लोगों की कोरोना और उसके अलग-अलग वेरिएंट के कारण मौत हुई थी।

क्या असली में होते हैं एलियंस?

ट्रंप ने खोलीं अमेरिका की गुप्त यूएफओ फाइलें

एजेंसी » नई दिल्ली

अमेरिका के रक्षा विभाग पेंटागन ने अज्ञात असामान्य घटनाओं से जुड़ी 'पहले कभी न देखी गई' फाइलों को जारी करना शुरू किया है। पहले इन घटनाओं को अज्ञात उड़ने वाली वस्तुओं (यूएफओ) के रूप में जाना जाता था। फाइलें पीढ़ियों से अमेरिकियों के लिए जिज्ञासा का स्रोत रही हैं जो यह सोचते हैं कि क्या हम ब्रह्मांड में अकेले हैं। न्यू यॉर्क टाइम्स के मुताबिक, शुरुआती तस्वीरें धुंधली हैं और उनमें कुछ भी दिख सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने सोशल मीडिया पर लिखा- 'आप खुद तय करें कि ये क्या है।' दुनिया भर की 400 से अधिक घटनाओं का जिक्र है। कई विडियो में US सेना द्वारा इन्फ्रारेड सेंसर से ली गई धुंधली फुटेज हैं। कई अमेरिकी खुफिया और रक्षा एजेंसियों के समन्वय से चलाया जा रहा है। इनमें युद्ध विभाग, राष्ट्रीय खुफिया निदेशक का कार्यालय, नासा, एफबीआई, ऊर्जा विभाग और पेंटागन का सर्व-क्षेत्रीय विसंगति समाधान कार्यालय (जिसे आमतौर पर एएआरओ के नाम से जाना जाता है) शामिल हैं।

» **फुटबॉल के आकार की वस्तुएं और क्षणिक गायब होना...** जारी की गई सामग्री में अंडाकार धातु की वस्तुओं, अस्पष्ट अवरक्त संकेतों और कथित तौर पर क्षणिक रूप से गायब होने वाले हवाई जहाजों से संबंधित रिपोर्टें शामिल हैं। युद्ध विभाग द्वारा जारी एक तस्वीर में कथित तौर पर 130 से 195 फीट लंबी एक कांस्य धातु की वस्तु आकाश में कुछ क्षणों के लिए दिखाई देने के बाद गायब हो जाती है। एक अन्य फ़ाइल में जापान के पास देखे गए फ़ुटबॉल के आकार के एक पिंड का ज़िक्र है, जिसे अमेरिकी इंडो-पैसिफिक कमांड ने दस्तावेज़ित किया था। इस संग्रह में 2025 में पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका के ऊपर ली गई इन्फ्रारेड तस्वीरें भी शामिल हैं, साथ ही अपोलो युग की पुरानी सामग्री भी है जिसमें अपोलो 17 चंद्र मिशन के दौरान खींची गई अज्ञात रोशनी की तस्वीरों का पुनः विश्लेषण किया गया है। इनमें से कुछ रिपोर्टें कई साल पुरानी हैं, जबकि कुछ हाल की हैं। ये सभी रिपोर्टें वाशिंगटन द्वारा सैन्य कर्मियों से जुड़े अज्ञात हवाई मुठभेड़ों के बारे में अधिक जानकारी सार्वजनिक करने के बढ़ते जन और संसदीय दबाव को संबोधित करने के प्रयास का हिस्सा हैं।

अंतरिक्ष यात्री ने केबिन से क्या देखा

अमेरिका की ओर से जारी 160 से अधिक फाइलों में अपोलो 11, अपोलो 12 और अपोलो 17 मून मिशन से जुड़ी घटनाएं शामिल है। अपोलो 11 उडान के बाद 1969 में हुई एक ब्रीफिंग में अंतरिक्ष यात्री बज एल्ड्रिन ने सोने की कोशिश करते समय केबिन के अंदर कुछ मिनटों के अंतराल पर हल्की-हल्की चमक दिखाई देने की बात कही थी।

स्पोर्ट्स ब्रीफ

ग्लोबल बनीं नोरा फतेही अब फीफा विश्व कप 2026 में परफॉर्मेंस से मचाएंगी धमाल

नई दिल्ली » नोरा फतेही 12 जून, 2026 को टोरंटो, कनाडा के बीएमओ फील्ड में आयोजित होने वाले फीफा विश्व कप 2026 के उद्घाटन समारोह में प्रस्तुति देंगी और गाएंगी, जो उनके अंतरराष्ट्रीय करियर में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। उनकी भागीदारी विश्व के सबसे बड़े खेल और मनोरंजन मंचों में से एक पर उनकी बढ़ती उपस्थिति को और मजबूत करती है। फीफा की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, नोरा उन वैश्विक कलाकारों में शामिल होंगी जिनमें एलनिस मॉरिसेट, एलेशिया कारा, इलियाना, जेसी रेयेज़, माइकल बुबले, संजॉय, वेजड्रीम और विलियम प्रिंस शामिल हैं।

जयशंकर की 'क्रिकेट डिप्लोमेसी', त्रिनिदाद में लारा से हुई मुलाकात

नई दिल्ली » विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार (स्थानीय समय) को त्रिनिदाद और टोबैगो में वेस्ट इंडीज के दिग्गज क्रिकेटर ब्रायन लारा से मुलाकात की। यह मुलाकात कैरेबियन में उनके तीन देशों के आधिकारिक दौरे के अंतिम चरण के दौरान हुई। उन्होंने X पर पूर्व बल्लेबाज के साथ अपनी तस्वीरें साझा करते हुए लिखा, ₹एकमात्र ब्रायन लारा के साथ।₹ लारा को सर्वकालिक महानतम बल्लेबाजों में गिना जाता है और उनकी तुलना सचिन तेंदुलकर, रिकी पोंटिंग और जैक्स कैलिस जैसे दिग्गज खिलाड़ियों से की जाती है।

विनेश फोगाट पर डब्ल्यूएफआई का बड़ा एक्शन, सभी टूर्नामेंटों पर 26 जून तक रोक

एजेंसी » नई दिल्ली

भारतीय कुश्ती महासंघ ने विनेश पर लगाए आरोप

फेडरेशन ने इसे देश के लिए शर्मनाक घटना बताया और कहा कि खिलाड़ी का कर्तव्य था कि वह पूरे टूर्नामेंट में अपने वजन नियमों का पालन करें। इसके अलावा, डब्ल्यूएफआई ने यह भी आरोप लगाया है कि विनेश पर एंटी-डोपिंग नियमों के उल्लंघन के संकेत मिले हैं। अंतरराष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (आईटीए) के अनुसार 18 दिसंबर 2025 को उनका एक "मिस्ड टेस्ट" दर्ज किया गया था, यानी वे डोप टेस्ट के लिए उपलब्ध नहीं थीं।

भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) ने तीन बार की ओलंपियन विनेश फोगाट को एक कारण बताओ नोटिस जारी किया है। इसके साथ ही उन्हें 2026 में गोंडा में होने वाले नेशनल ओपन रैंकिंग टूर्नामेंट में भाग लेने से रोक लगा दिया है। फेडरेशन ने उन्हें अस्थायी रूप से सभी टूर्नामेंट्स के लिए अयोग्य भी घोषित कर दिया गया है। 15 पन्नों के इस नोटिस में भारतीय कुश्ती महासंघ ने विनेश पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। इनमें सबसे बड़ा आरोप 2024 पेरिस ओलंपिक के दौरान वजन सीमा को लेकर है। फेडरेशन ने वजन सीमा तय नहीं रखने का कारण पूछा है। वजन के कारण ही विनेश को मुकाबले से बाहर होना पड़ा था और साथ ही भारत ने मेडल भी गंवा दिया था।

फेडरेशन ने विनेश को सभी प्रतियोगिता में भाग लेने से लगाया रोक... फेडरेशन ने फिलहाल उन्हें सभी प्रतियोगिताओं से 26 जून 2026 तक अस्थायी रूप से रोक दिया है। साथ ही उन्हें 14 दिन में जवाब देने को कहा गया है। यह मामला उस विवाद के बीच सामने आया है जिसमें विनेश ने गोंडा में होने वाले टूर्नामेंट की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर चिंता जताई थी। उन्होंने कहा था कि वहां माहौल उनके लिए असहज हो सकता है और वे अपना पूरा प्रदर्शन नहीं दे पाएंगी। फेडरेशन ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि सुरक्षा की पूरी व्यवस्था की जाएगी और प्रतियोगिता निष्पक्ष होगी।

फेडरेशन ने 2024 में भी एक अन्य "व्हेयरअबाउट फेलियर" का जिक्र किया है और कहा कि यह लगातार नियमों के पालन में चूक का हिस्सा हो सकता है। डब्ल्यूएफआई ने यह भी आरोप लगाया है कि रिटायरमेंट के बाद दोबारा प्रतिस्पर्धा में लौटने के लिए जरूरी छह महीने की प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया। इसके अलावा मार्च 2024 के ट्रायल्स में दो अलग-अलग वजन वर्गों (50 किलो और 53 किलो) में भाग लेने को भी नियमों का उल्लंघन बताया गया है।

विश्व चैंपियन गुकेश की दमदार वापसी

नई दिल्ली » विश्व चैंपियन डी गुकेश ने सुपर रैपिड और ब्लिट्ज टूर्नामेंट के रैपिड वर्ग के नौवें और अंतिम दौर में अमेरिकी ग्रैंडमास्टर फैबियानो कारुआना को हराकर संयुक्त चौथा स्थान हासिल किया। पिछले कुछ महीनों से अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाने वाले गुकेश ने इस तरह से फॉर्म में वापसी की। रैपिड वर्ग के बाद अब ब्लिट्ज वर्ग में 18 दौर की बाजियां खेली जानी बाकी हैं। रैपिड के अंतिम दिन 19 वर्षीय गुकेश ने फ्रांसीसी ग्रैंडमास्टर मैक्सिम वाचियर-लाग्रेव के खिलाफ हार के साथ शुरुआत की और फिर आठवें दौर में स्लोवेनिया के व्लादिमीर फेडोसेव के साथ ड्रॉ खेला। अमेरिकी खिलाड़ी हैंस मोके नीमन ने 13 अंकों के साथ इस वर्ग का विजेता बनकर इतिहास रचा।

नीमन ने अपने हमवतन वेस्ली सो को पूरे एक अंक से पीछे छोड़ा। फेडोसेव 11 अंक लेकर तीसरे स्थान पर रहे। गुकेश ने कहा, ''रैपिड वर्ग में मेरा प्रदर्शन उतार चढ़ाव वाला रहा। मैंने अच्छा खेल दिखाया लेकिन मैं कुछ मौके चूक गया। कुछ मैच ऐसे भी थे जिनमें मैं मुश्किल में था और किसी तरह खुद को बचा पाया। मेरा प्रदर्शन और बेहतर हो सकता था।''

फ्रेंच ओपन से पहले इनामी राशि पर बवाल

यानिक सिनर बोले- ये सम्मान की लड़ाई है...

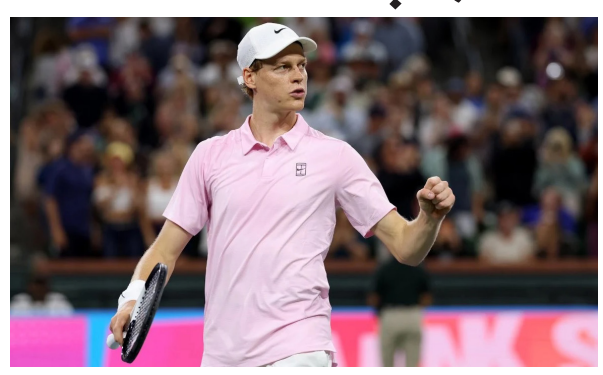

एजेंसी » नई दिल्ली

टेनिस की दुनिया में इन दिनों इनामी राशि को लेकर बहस तेज होती जा रही है और अब दुनिया के शीर्ष खिलाड़ी भी खुलकर अपनी बात रख रहे हैं। मौजूद जानकारी के अनुसार विश्व नंबर एक खिलाड़ी यानिक सिनर ने फ्रेंच ओपन में घोषित नई इनामी राशि पर निराशा जताई है और इसे खिलाड़ियों के योगदान के मुकाबले कम बताया है।

रोलां गैरो के आयोजकों ने इस बार कुल इनामी राशि में करीब 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी करते हुए इसे 61.7 मिलियन यूरो कर दिया है। हालांकि खिलाड़ियों का मानना है कि यह बढ़ोतरी टूर्नामेंट की कुल कमाई के हिसाब से पर्याप्त नहीं है और उनकी मेहनत के हिसाब से नहीं है।

यानिक सिनर ने इटैलियन ओपन के दौरान प्रेस वार्ता में कहा कि यह मुद्दा केवल पैसे का नहीं बल्कि सम्मान का है। उनके अनुसार खिलाड़ी खेल को जितना देते हैं, उसके मुकाबले उन्हें उतना सम्मान और लाभ नहीं मिल रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि पुरुष और महिला वर्ग के शीर्ष 10-10 खिलाड़ियों ने इस विषय पर एक संयुक्त पत्र लिखा था, लेकिन एक साल बाद भी कोई ठोस प्रतिक्रिया नहीं मिली है। मौजूद जानकारी के अनुसार खिलाड़ियों ने केवल इनामी राशि ही नहीं बल्कि बेहतर प्रतिनिधित्व, स्वास्थ्य सुविधाएं और पेंशन जैसी मांगें भी उठाई हैं।

दिल्ली को मिली बड़ी जिम्मेदारी, 2026 राष्ट्रमंडल टेबल टेनिस चैम्पियनशिप की करेगा मेजबानी

एजेंसी » नई दिल्ली

दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में 22वीं राष्ट्रमंडल टेबल टेनिस चैम्पियनशिप का आयोजन होगा जिसमें 35 से अधिक देशों के भाग लेने की उम्मीद है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बुधवार को यह घोषणा की। चैम्पियनशिप 27 जुलाई से दो अगस्त तक दिल्ली सरकार और भारतीय टेबल टेनिस महासंघ द्वारा आयोजित की जाएगी।

दिल्ली सचिवालय में इसकी घोषणा करते हुए गुप्ता ने कहा, 'दिल्ली सरकार विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा, बेहतरीन बंदोबस्त और खिलाड़ियों तथा दर्शकों के लिए खेल का उम्दा माहौल देने को प्रतिबद्ध है।' अधिकारियों के अनुसार सात दिवसीय चैम्पियनशिप में इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, मलेशिया, सिंगापुर, स्कॉटलैंड, वेल्स, नाइजीरिया, कीनिया, जमैका , त्रिनिदाद और टोबैगो के खिलाड़ी भाग लेंगे।

सात्विक का छलका दर्द

'बच्चों को बैडमिंटन नहीं खेलने दूंगा'

नई दिल्ली » भारतीय बैडमिंटन से जुड़ी एक भावनात्मक तस्वीर सामने आई है, जहां देश के शीर्ष खिलाड़ियों ने अपनी उपलब्धियों के बावजूद मिल रहे सीमित सम्मान को लेकर खुलकर बात की है। मौजूद जानकारी के अनुसार, भारत की प्रमुख युगल जोड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने हाल ही में एक बातचीत के दौरान अपनी निराशा जाहिर की।

खेल मंत्रालय का बड़ा फैसला: पाक से द्विपक्षीय सीरीज पर बैन, बहु-राष्ट्र टूर्नामेंट को हरी झंडी

एजेंसी » नई दिल्ली

भारत के खेल मंत्रालय ने पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय खेल आयोजनों पर प्रतिबंध जारी रखा है, लेकिन बहुराष्ट्रीय आयोजनों को इससे छूट दी है। मंत्रालय ने खिलाड़ियों, टीम अधिकारियों, तकनीकी कर्मियों और अंतर्राष्ट्रीय खेल शासी निकायों के पदाधिकारियों के लिए वीजा प्रक्रिया को सरल बनाने की अपनी प्रतिबद्धता को भी दोहराया है, क्योंकि भारत खुद को एक पसंदीदा खेल गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करता है। मंत्रालय ने कहा कि एक-दूसरे के देश में होने वाले द्विपक्षीय खेल आयोजनों के संबंध में, भारतीय टीमें पाकिस्तान में होने वाली प्रतियोगिताओं में भाग नहीं लेंगी। न ही हम पाकिस्तानी टीमों को भारत में खेलने की अनुमति देंगे। मंत्रालय ने सभी राष्ट्रीय खेल संघों (एनएसएफ), भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) और भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) को जारी एक परिपत्र में यह बात कही। इस बीच, मंत्रालय ने कहा कि वह बहुराष्ट्रीय आयोजनों के लिए अंतरराष्ट्रीय निकायों की नीतियों का पालन करेगा। इसमें आगे कहा गया है कि भारत या विदेश में होने वाले अंतरराष्ट्रीय और बहुपक्षीय आयोजनों के संबंध में, हम अंतरराष्ट्रीय खेल निकायों की कार्यप्रणालियों और अपने खिलाड़ियों के हितों का ध्यान रखते हैं। मंत्रालय ने आगे कहा कि तदनुसार, भारतीय टीमें और व्यक्तिगत खिलाड़ी उन अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में भाग लेंगे जिनमें पाकिस्तान की टीमें या खिलाड़ी भी शामिल हैं। इसी प्रकार, पाकिस्तानी खिलाड़ी और टीमें भारत द्वारा आयोजित ऐसे बहुपक्षीय आयोजनों में भाग ले सकेंगी।

नया प्रोजेक्ट

बोली- अपनी शर्तों पर जीवन जीया

रेखा की बायोपिक में काम करना चाहती हैं कृति सेनन

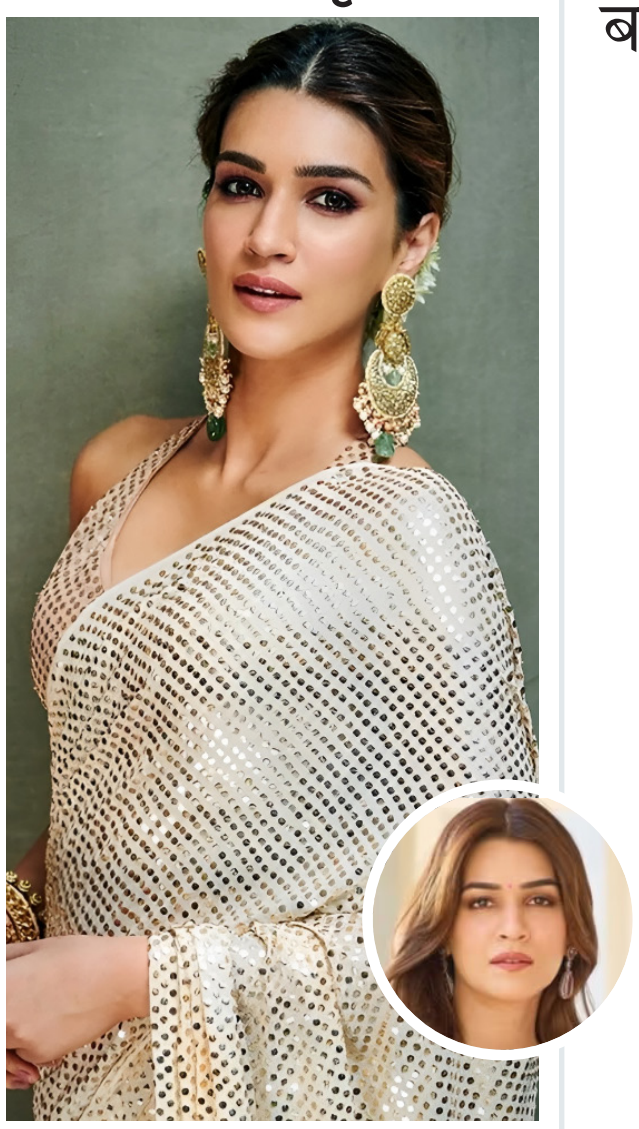

कृति सेनन अपनी दमदार एक्टिंग के लिए जानी जाती हैं। जल्द ही वह शाहिद कपूर संग कॉकटेल 2 में नजर आएंगी। इसी बीच एक्ट्रेस ने दिग्गज अभिनेत्री रेखा की जमकर तारीफ की और कहा कि अगर उन्हें मौका मिले तो वह उनकी बायोपिक में उनका किरदार निभाना पसंद करेंगी।

» **रेखा की बायोपिक में काम करना चाहती हैं कृति सेनन...** एक इंटरव्यू में कृति सेनन से पूछा गया कि वह किसकी बायोपिक में काम करना पसंद करेंगी। उन्होंने झट से जवाब दिया, "रेखा वो सबसे बड़ी खलनायिका हैं। मुझे पता है कि मैं उनके जैसी बिल्कुल नहीं दिखती, लेकिन मैं उन्हें बहुत पसंद करती हूं। उनका दिल, उनका साहस, उनका व्यक्तित्व, वो मिलनसार, बुद्धिमान हैं और उन्होंने अपनी शर्तों पर जीवन जीया है।"

» **कृति सेनन ने अपने करियर को लेकर की बात...** इंटरव्यू में कृति सेनन ने अपने करियर में आए उतार-चढ़ाव पर बात की। उन्होंने कहा, "फिल्म साइन करने में कुछ भूमिकाएं ऐसी थीं, जिनके मैं बेहद करीब पहुंच गई थी, लेकिन अंततः वे स्टार किड्स को मिल गईं, जो मेरे बस में नहीं था। जब आप फिल्मी दुनिया से नहीं आते हैं, तो आपको बहुत स्ट्रगल करना पड़ता है। मैंने बहुत मेहनत की और सोच समझकर फैसले लिए। मुझे कुछ भी आसानी से नहीं मिला था।"

» **कॉकटेल 2 में नजर आएंगी कृति सेनन...** वर्कफ्रंट की बात करें तो वह फिलहाल शाहिद कपूर और रश्मिका मंदाना के साथ अपनी अपकमिंग फिल्म कॉकटेल 2 की रिलीज की तैयारियों में बिजी हैं। यह फिल्म 19 जून को रिलीज होने वाली है। इसमें मूवी में एक्ट्रेस बेहद ग्लैमरस रूप में नजर आएंगी। उन्होंने एक इंटरव्यू में यह भी कहा कि यह कॉकटेल का सीक्वल पूरी तरह से नहीं है। इसकी कहानी एकदम अलग है।

'द ग्रेट ग्रैंड सुपरहीरो' में दिखेगा जैकी श्रॉफ का अनोखा अंदाज'

बॉलीवुड एक्टर जैकी श्रॉफ इन दिनों अपनी नई फिल्म 'द ग्रेट ग्रैंड सुपरहीरो' को लेकर खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं। इस फिल्म का टीजर पहले ही रिलीज हो चुका है, जिसे दर्शकों ने खूब पसंद किया है। इस बार जैकी श्रॉफ न तो विलेन बन रहे हैं और न ही कोई साधारण हीरो, बल्कि वह एक अनोखे सुपरहीरो के रूप में स्क्रीन पर वापसी कर रहे हैं। अब फिल्म की रिलीज डेट भी कंफर्म हो गई है, जिससे फैंस के बीच उत्साह और बढ़ गया है।

» **इस दिन होगी फिल्म रिलीज...** जैकी श्रॉफ की इस मोस्ट अवेटेड फिल्म की रिलीज डेट का ऐलान कर दिया गया है। 'द ग्रेट ग्रैंड सुपरहीरो' 29 मई 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। फिल्म की तारीख सामने आते ही सोशल मीडिया पर फैंस अपनी खुशी जाहिर कर रहे हैं। जी स्टूडियोज और आमदावाद फिल्म्स के बैनर तले बनी यह फिल्म भारतीय सिनेमा में सुपरहीरो की कहानी को एक बिल्कुल नए अंदाज में पेश करने वाली है।

» **कैसी होगी फिल्म की कहानी ?** इस फिल्म के टीजर में एक छोटे बच्चे की सपनों वाली दुनिया दिखाई गई है। कहानी में दिखाया गया है कि कैसे एक दादा और पोते का प्यारा रिश्ता, अचानक एक जादुई सुपरहीरो के सफर में बदल जाता है। इस फिल्म में आपको सिर्फ दिल छू लेने वाली बातें ही नहीं, बल्कि जबरदस्त एक्शन भी देखने को मिलेगा। साथ ही कहानी में एलियंस और कुछ रहस्यमयी घटनाएं भी दिखाई जाएंगी, जो फिल्म को और भी मजेदार और रोमांचक बना देंगी।

» **फिल्म में नजर आएंगे ये बड़े सितारे...** इस फिल्म में जैकी श्रॉफ के साथ प्रतीक स्मिता पाटिल, भाग्यश्री दसानी और शरत सक्सेना जैसे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। इनके अलावा मिहिर गोडबोले, दुर्गेश कुमार और सहर्ष शुक्ला जैसे कलाकार भी कहानी को दिलचस्प बनाएंगे।

फिल्म पर जैकी श्रॉफ ने क्या कहा?

फिल्म को लेकर जैकी श्रॉफ ने कहा, द ग्रेट ग्रैंड सुपरहीरो के जरिए हम हर बच्चे का सपना दिखाना चाहते हैं। अगर इंसान दिल से हमेशा जवान रहे और 90 साल की उम्र तक मजबूत बना रहे, वही असली सुपरहीरो है। बच्चों के सपने हमेशा सबसे जरूरी होने चाहिए।'

करण जौहर ने पोस्ट शेयर कर दिया हिंट

क्या लक्ष्य संग नई फिल्म बना रहे हैं संदीप रेड्डी वांगा?

'एनिमल' और 'कबीर सिंह' जैसी सुपरहिट फिल्में बनाने वाले डायरेक्टर संदीप रेड्डी वांगा अब एक नए प्रोजेक्ट की तैयारी में हैं। इस फिल्म में वह यंग एक्टर लक्ष्य के साथ काम करने जा रहे हैं। इस खबर की जानकारी प्रोड्यूसर करण जौहर ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक पोस्ट शेयर करके दी है। उन्होंने संदीप और लक्ष्य की एक फोटो शेयर की है, जिसके बाद से ही फैंस इस नई जोड़ी को लेकर काफी एक्साइटेड नजर आ रहे हैं।

» **एक्शन का दिखेगा जबरदस्त डोज...** करण जौहर ने दोनों की तस्वीर शेयर करते हुए पोस्ट में लिखा है कि, 'यहां क्या होने वाला है?' साथ ही शेयर की गई पोस्ट पर लिखा था, 'सिनेमा फिर से डेंजरस होने वाला है' इसका मतलब है कि यह फिल्म भी संदीप रेड्डी वांगा के सिग्नेचर स्टाइल यानी भरपूर एक्शन और रोमांच से सजी होगी। हालांकि फिल्म का नाम अभी रिवील नहीं किया गया है। एक्टर लक्ष्य ने भी फिल्म 'किल' में अपने एक्शन से सबका दिल जीता था। अब इन दोनों का साथ आना दर्शकों के लिए किसी बड़े सरप्राइज से कम नहीं है।

» **अभी इन फिल्मों में बिजी हैं संदीप और करण...** संदीप रेड्डी वांगा फिलहाल प्रभास के साथ फिल्म 'स्पिरिट' की तैयारी कर रहे हैं। वहीं करण जौहर भी कार्तिक आर्यन की फिल्म 'नागजिला' और अनन्या पांडे की फिल्म 'चांद मेरा दिल' को प्रोड्यूस कर रहे हैं। हालांकि लक्ष्य के साथ आने वाली इस फिल्म के बारे में अभी ज्यादा जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन माना जा रहा है कि यह फिल्म एक्शन के शौकीनों के लिए बेहद खास होने वाली है।

'क्यों कि सास भी कभी बहू थी 2'

तुलसी-मिहीर ने लिया शादी का बड़ा फैसला

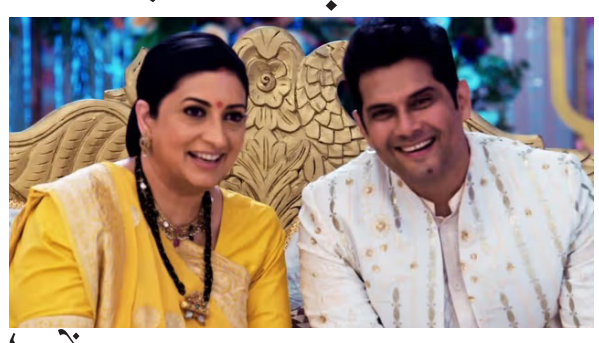

'क्यों कि सास भी कभी बहु थी 2' में इन दिनों लगातार बड़े ट्विस्ट देखने को मिल रहे हैं। स्मृति ईरानी स्टारर यह शो टीआरपी में भी शानदार प्रदर्शन कर रहा है। आने वाले एपिसोड में रिश्तों के बीच उलझन, शक और इमोशनल ड्रामा दर्शकों को खूब एंटरटेन करने वाला है।

» **परी की शादी की खबर से टूटा अजय...** शो में दिखाया जाएगा कि स्कूल के बाहर परी और अजय की मुलाकात होती है। बातचीत के दौरान परी अजय को बताती है कि जल्द ही तुलसी और मिहीर शादी करने वाले हैं और उसके बाद उसकी शादी आर्यन से होगी। यह बात सुनकर अजय पूरी तरह टूट जाता है। हालांकि परी उसे जिंदगी में आगे बढ़ने की सलाह देती है, लेकिन अजय पुराने पलों को याद कर भावुक हो जाता है।

» **जल्द निकली तुलसी और मिहीर की शादी की तारीख...** दूसरी तरफ मिहीर शादी जल्दी कराने के लिए पंडित जी से जल्द मुहूर्त निकलवाने की कोशिश करता है। पंडित जी बताते हैं कि अगले दिन का मुहूर्त सबसे शुभ है। यह सुनते ही मिहीर खुश हो जाता है और शादी की तैयारियों में जुट जाता है। हालांकि तुलसी चाहती है कि शादी बेहद सादगी से हो। वह फैसला करती है कि शादी मंदिर में होगी, ठीक वैसे ही जैसे पहले हुई थी।

» **करण और नंदिनी को साथ देखकर चौंका रियो...** एपिसोड में सबसे बड़ा ट्विस्ट तब आता है, जब करण और नंदिनी तुलसी के लिए साड़ी खरीदने एक स्टोर पहुंचते हैं। संयोग से उसी स्टोर में रियो भी अपनी मां नीयति के साथ मौजूद होता है। शॉपिंग के दौरान रियो की नजर करण और नंदिनी पर पड़ती है। दोनों को साथ देखकर उसके मन में शक पैदा हो जाता है।

'खतरों के खिलाड़ी-15': शेरनी जैसी हिम्मत के साथ लौट रहीं रुबीना दिलैक

टीवी की 'छोटी बहु' से घर-घर में मशहूर एक्ट्रेस रुबीना दिलैक एक बार फिर खतरनाक स्टंट वाले शो 'खतरों के खिलाड़ी 15' में वापस आ रही हैं। इससे पहले वो सीजन 12 में दिखी थीं, जहां उन्होंने बहुत अच्छा खेल दिखाया था। लेकिन इस बार रुबीना का अंदाज बिल्कुल अलग होने वाला है। उन्होंने बताया है कि इस बार वो सिर्फ एक खिलाड़ी के तौर पर नहीं, बल्कि एक मां के तौर पर इस शो में उतर रही हैं। रुबीना ने बताया कि उन्हें इस बार खतरों से लड़ने की हिम्मत अपनी दो नन्हीं बेटियों से मिली है। रुबीना हाल ही में जुड़वां बेटियों की मां बनी हैं। उनका कहना है कि बच्चों के साथ समय बिताकर उन्होंने सीखा कि असली बहादुरी क्या होती है।

14 दिनों में 50 करोड़ के पार पहुंची 'माइकल'

जाफर जैक्सन की फिल्म ने भारत में बनाया रिकॉर्ड

हॉलीवुड के मशहूर पॉप स्टार माइकल जैक्सन की जिंदगी पर बनी फिल्म 'माइकल' भारतीय बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन कर रही है। फिल्म में जाफर जैक्सन मुख्य भूमिका में नजर आ रहे हैं और दर्शकों से उनकी एक्टिंग को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है। रिलीज के दो हफ्तों बाद भी फिल्म की कमाई मजबूत बनी हुई है।

» **दूसरे हफ्ते में भी बरकरार रहा फिल्म का जलवा...** फिल्म ने दूसरे हफ्ते में करीब 20 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई की है। वहीं दूसरे गुरुवार को भी फिल्म ने लगभग 1।5 करोड़ रुपये का कारोबार किया। पहले हफ्ते की तुलना में फिल्म की कमाई में मामूली गिरावट देखने को मिली, लेकिन इसके बावजूद 'माइकल' सिनेमाघरों में मजबूती से टिकी हुई है। रिपोर्ट्स के अनुसार, भारत में 14 दिनों के अंदर फिल्म का कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन लगभग 52 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। यह आंकड़ा किसी म्यूजिकल हॉलीवुड फिल्म के लिए बेहद खास माना जा रहा है। ट्रेड रिपोर्ट्स के मुताबिक, तीसरे वीकेंड में फिल्म की कमाई में फिर उछाल देखने को मिल सकता है और जल्द ही यह 60 करोड़ रुपये का आंकड़ा भी पार कर सकती है।

» **भारत में बना नया रिकॉर्ड...** 'माइकल' ने भारत में म्यूजिकल हॉलीवुड फिल्मों के लिए नया बेंचमार्क सेट कर दिया है। इससे पहले टेलर स्विफ्टः द एराज़ टूर और बोहेमियन गाथा जैसी फिल्मों ने भी भारतीय दर्शकों के बीच लोकप्रियता हासिल की थी, लेकिन कमाई के मामले में 'माइकल' उनसे काफी आगे निकल चुकी है।

» **2026 हॉलीवुड फिल्मों के लिए रहा शानदार...** 'माइकल' इस साल भारत में सफल रहने वाली हॉलीवुड फिल्मों की लिस्ट में शामिल हो गई है। इससे पहले प्रोजेक्ट हेल मैरी और द मम्मी भी अच्छा प्रदर्शन कर चुकी हैं। वहीं हाल ही में रिलीज हुई द डेविल वियर्स प्राडा 2 को भी दर्शकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। ट्रेड एक्सपर्ट्स का मानना है कि 2026 भारत में हॉलीवुड फिल्मों के लिए एक मजबूत साल साबित हो सकता है।

बॉलीवुड न्यूज

दिलजीत दोसांझ बनेंगे पंजाब का राजनीतिक चेहरा? खुद दिया दो टूक जवाब

» ग्लोबल स्टार और पंजाबी आइकन दिलजीत दोसांझ को लेकर लंबे समय से चल रही राजनीतिक अटकलों पर आखिरकार विराम लग गया है। हाल ही में सिविल सोसाइटी के एक समूह द्वारा उन्हें पंजाब की राजनीति का नया चेहरा बनने की अपील की गई थी, जिसे दिलजीत ने विनम्रतापूर्वक ठुकरा दिया है। दिलजीत दोसांझ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (ट्विटर) पर पंजाबी में जवाब देते हुए अपनी स्थिति साफ की। उन्होंने लिखा, "कदे वी नहीं... मेरा काम एंटरटेनमेंट करना है। मैं अपने क्षेत्र में बहुत खुश हूँ। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।" आइये जानते हैं पूरा मामला क्या है? शीर्षक वाले एक लेख के बाद सामने आई। रिपोर्ट में कहा गया था कि सिविल सोसाइटी के कार्यकर्ताओं के एक समूह ने, जिसमें रिटायर्ड सैनिक और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोग शामिल थे, दिलजीत से राजनीति में आने का आग्रह किया था। रिटायर्ड नौकरशाह एस.एस. बोपाराई के नेतृत्व वाले इस समूह की कथित तौर पर यह इच्छा है कि यह एक्टर-संगीतकार नेतृत्व करे, क्योंकि उसने खुद कभी ऐसी भूमिका की मांग नहीं की।

जुनैद खान और साई पल्लवी की जोड़ी नहीं चला पाई जादू

» बॉलीवुड की रोमांटिक ड्रामा फिल्म एक दिन ने पहले हफ्ते में बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं किया है। फिल्म में जुनैद खान और साई पल्लवी की नई जोड़ी को दर्शकों से मिली-जुली प्रतिक्रिया मिली, लेकिन यह फिल्म दर्शकों को सिनेमाघरों तक खींचने में सफल नहीं हो पाई। रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिल्म ने अपने पहले सात दिनों में दुनिया भर में लगभग 5।15 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। भारत में फिल्म की शुरुआत करीब 1।15 करोड़ रुपये से हुई थी, लेकिन इसके बाद रोजाना कमाई में लगातार गिरावट देखने को मिली। फिल्म को लेकर शुरुआती प्रतिक्रिया तो ठीक रही, लेकिन दर्शकों के बीच मजबूत वर्ड ऑफ माउथ नहीं बन पाया। यही वजह रही कि मेट्रो शहरों में भी ऑक्यूपेंसी कम रही और लगभग 9,700 से ज्यादा शो में दर्शकों की संख्या सीमित रही। विदेशी बाजार से फिल्म ने करीब 45 लाख रुपये का योगदान दिया, जिससे इसका कुल वर्ल्डवाइड कलेक्शन लगभग 5 करोड़ रुपये तक पहुंचा। हालांकि यह आंकड़ा मिड-बजट रोमांटिक फिल्मों के लिए कमजोर माना जा रहा है।

दीपिका की कॉकटेल से कॉकटेल 2 की तुलना पर कृति सेनन ने तोड़ी चुप्पी

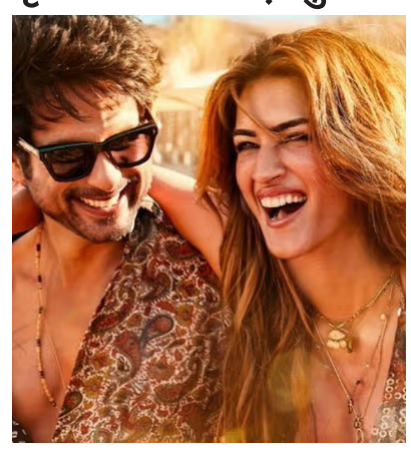

» बॉलीवुड एक्ट्रेस कृति सेनन अपनी अपकमिंग फिल्म 'कॉकटेल 2' की रिलीज के लिए तैयार हैं, जिसमें रश्मिका मंदाना और शाहिद कपूर भी हैं। कृति ने शाहिद संग 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' में काम किया है, हालांकि रश्मिका मंदाना संग यह उनकी पहली फिल्म है। ऐसे में एक्ट्रेस ने पुष्पा अभिनेत्री संग अपने काम के एक्सपीरियंस पर बात की। कृति ने कॉकटेल 2 और 2012 में आई पहली फिल्म, जिसमें सैफ अली खान, दीपिका पादुकोण और डायना पेंटी ने अभिनय किया था, के बीच तुलना पर भी बात की। इसपर कृति ने कहा कि नई फिल्म ओरिजनल फिल्म का पूरी तरह सीक्वल नहीं है, बल्कि एक अलग कहानी और किरदारों वाली फ्रेंचाइज फिल्म है। तुलनाओं के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, "मुझे यकीन है कि तुलना तो होगी ही, लेकिन अच्छी बात यह है कि यह कोई सीक्वल नहीं है। यह एक फ्रेंचाइज है। इसलिए यह एक अलग ही माहौल वाली फ्रेंचाइज है, और इसके किरदार अलग-अलग हैं।"

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक कलासो देवी के द्वारा सूचना प्रिंटर, 33 एस मॉडल टाउन मार्केट हिसार, हरियाणा से मुद्रित करवाकर बाला जी सेनेटरी स्टोर, करनाल रोड, डिफेंस कॉलोनी, गली नंबर-8, रिलायंस स्मार्ट पॉइंट के पास, कैथल से प्रकाशित। संपादक कलासो देवी। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र कैथल होगा। RNI No. HRHIN/26/A1127, मोबाइल नंबरः 9499422208, Email: Info@hindustanekta.com